वो अलबेलापन

बचपन की यादें बड़ी सुहानी

आओ सुनाएँ यह कहानी,

सुला देती थी दादी की लोरियाँ

मुस्कुराहट में छिपी शरारतें जैसे गिलहरियाँ ।

स्कूल में दोस्तों से मिलकर खेलना लुका-छुपी

साथ पढ़ना गणित और भाषा- लिपी,

बारिश में बनाए काग़ज़ की कश्ती

हर दिन करे खूब मस्ती।

यादें रह गयी, छूट गया बचपन,

जाने कहाँ छिप गया वो अलबेलापन।

खुशी गुप्ता

11 B